महाकवि भारविविरचित किरातार्जुनीयम्

प्रथम सर्ग

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम् |

स वर्णलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः ||१||

संदर्भ - प्रस्तुत पद्य महाकवि भारवि विरचित महाकाव्य किरातार्जुनीयम के प्रथम सर्ग से है।

अन्वय- कुरूणाम् अधिपस्य श्रियः पालनीं प्रजासु वृत्तिं वेदितुं यम् अयुङ्क्त वर्णलिङ्गी सः वनेचरः विदितः (सन्) द्वैतवने युधिष्ठिरं समाययौ |

भावार्थ – कुरुदेश के राजा (सुयोधन) की राजलक्ष्मी को प्रतिस्थापित करने वाले प्रजा के प्रति व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने जिसे नियुक्त किया था, वह ब्रह्मचारी वेशधारी वनवासी (किरात) सभी वृत्तान्त जानता हुआ द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास आया।

व्याकरण –

कुरूणाम् = कुरु शब्द का षष्ठी बहुवचन, अधिपस्य = अधिप शब्द का षष्ठी एकवचन

श्रियः = श्री शब्द का षष्ठी एकवचन, पालनीं = पालनी शब्द का द्वितीया एकवचन, प्रजासु = प्रजा शब्द का सप्तमी बहुवचन, वृत्तिं = वृत्ति शब्द का द्वितीया एकवचन, वेदितुं = √विद्+तुमुन्, यम् = यत् शब्द का द्वितीया एकवचन, अयुङ्क्त = लुङ् लकार, प्र०पु०, एक०; वर्णलिङ्गी = वर्णलिङ्गी शब्द का प्रथमा एकवचन, सः =

तत् शब्द का प्रथमा एकवचन, वनेचरः = वनेचर शब्द का प्रथमा एकवचन, विदितः= √विद्+क्त, द्वैतवने = द्वैतवन शब्द का सप्तमी एकवचन युधिष्ठिरं = युधिष्ठिर शब्द का द्वितीया एकवचन, समाययौ = सम+आ+√या+लिट्लकार, प्र०पु०, एक०।

व्याख्या-

महाकवि भारवि ने इस श्लोक में राज-व्यवस्था से संबन्धित महत्त्वपूर्ण बातों का उल्लेख किया है। सर्वप्रथम किसी भी राजा का धन उसका सबसे बड़ा साधन है जो उसको दृढ़ता से स्थापित करता है। किन्तु, धन मात्र से ही उस राजा की सत्ता स्थिर नहीं हो जाती, बल्कि उसकी प्रजा की उसके प्रति कैसी सोच है यह भी अति महत्त्वपूर्ण है। प्रजा की सोच राजा की प्रजानीति और प्रजा के प्रति उसके व्यवहार के आधार पर बनती और बिगड़ती है। वस्तुतः राजा के प्रति प्रजा की शुभ सोच ही उस राजा की राजलक्ष्मी सिद्ध होती है और राजा का शासन सुस्थिर रहा पाता है। युधिष्ठिर ने अपने गुप्तचर को भेज कर इन्हीं रहस्यों को जानने का प्रयास किया था। वे जानना चाहते थे कि सुयोधन प्रजा के साथ कैसा व्यवहार कर रहा है और प्रजा उसके व्यवहारों के प्रति अपना क्या विचार रखती है। शत्रु के गुण-दोषों का सही मूल्यांकन एक राजा के लिए अत्यंत आवश्यक होता है और युधिष्ठिर ने इसी को भेदने का प्रयास अपने गुप्तचर के माध्यम से किया। उनका गुप्तचर वर्णलिंगी अर्थात ब्रह्मचारी है। ब्रह्मचारी के वेश में भ्रमण करने से वह सरलता से राज्य में घूम फिर सकता था और लोगों से राजविषयक बातों पर निःशंक चर्चा भी कर सकता था जो उसने किया और अपने तथ्यों के साथ वापस आकार युधिष्ठिर को अवगत कराना चाहता था। कवि ने इस पद्य में गुप्तचर के इसी आगमन की सूचना भी दे दी है जो युधिष्ठिर से मिलने के लिए प्रतीक्षारत है।